आर.एन.आई-संख्या : DELHIN/2007/23260
पोस्टल रजि. संख्या : DL (N) 06/213/14-16
प्रकाशन की तिथि–2 जनवरी 2015

सृष्टि संवत्- 1, 96, 08, 53, 115
युगाब्द-5115, अंक-90-78, वर्ष-8,
माघ मास, कृष्ण पक्ष, जनवरी-2015
शुल्क- 9/ रुपये प्रति, वार्षिक शुल्क-100/ रुपये
डाक प्रेषण तिथि:5-6 जनवरी, कुल पृष्ठ-8

प्रेषक : सम्पादक, कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्ष गुरुकुल, टटेसर जौन्ती, दिल्ली-81

राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

महर्षि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com सम्पर्क सूत्रः 9350945482 Web: www.aryanirmatrisabha.com
संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य' सह-संपादक : आचार्य सतीश

द्विता वि वव्रे सनजा सनीळे अयास्यः स्तवमानेभिरर्कैः। भगो न मेने परमे व्योमन्नधारयद्रोदसी सुदंसाः॥-ऋ० १।११।६२।७

व्याख्यान–जैसे विद्वानों से जो (सनीडे) समीप (स्तवमानेभिः) स्तुति युक्त (अर्कैः) स्तोत्रों से (सनजा) सनातन कारण से उत्पन्न हुई (द्विता) दो अर्थात् प्रजा और सभाध्यक्ष का (विवव्रे) विशेष करके स्वीकार किया जाता है वैसे मनुष्य (अयास्यः) अनायास से सिद्ध करने वाला (सुदंसा) उत्तम कर्मयुक्त मैं जैसे (परमे) (व्योमन्) उत्तम अन्तरिक्ष में (रोदसी) प्रकाश और भूमि को (भगो न) सूर्य के समान विद्वान् (मेने) मानता और (अधारयत्) धारण करता है वैसे इस को धारण करता और मानता हूँ।

सम्पादकीय

आज कल धर्मान्तरण और पुनर्धर्मान्तरण की घटनाओं को लेकर काफी चर्चा संचार माध्यमों में हो रही है। सवा अरब की जनसंख्या वाले देश में दो-चार व्यक्तियों के इधर से उधर परिवर्तन को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया जा रहा है जैसे देश में बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया हो। मिडिया द्वारा तो अपनी टी॰आर॰पी॰ बढ़ाने के लिए घटनाओं को सनसनीखेज बनाना व्यवसाय का एक आवश्यक अंग बन गया है, इसलिए उन घटनाओं से अपने स्वार्थों की पूर्ति करने वालों को छोड़ दिया जाए तो अन्य लोग उसे गम्भीरता से भी नहीं लेते हैं। इस प्रकार की घटनाएं एक बहुमतान्तर वाले समाज में होती ही रहती हैं लेकिन इस राष्ट्र में हजारों वर्षों तक ये धर्मान्तरण (वास्तव में यह मतान्तरण है, क्योंकि धर्म तो एक ही है और उससे बदलकर मनुष्य अधर्म को ही प्राप्त होता है) एक दिशा में ही होता रहा है। एक दिशा में अर्थात् आर्यवंशियों का परिवर्तन मुस्लिम मत में या ईसाई मत में। करोड़ों लोगों का इस प्रकार धर्म से अधर्म की और पलायन हुआ। और इसका कारण भी कोई विचारधारा का परिवर्तन नहीं रहा अपितु भय, स्वार्थ, प्रलोभन आदि रहा है जिसके आधार पर धर्मान्तरण आज भी हमारे संविधान के अनुसार गैर-कानूनी है। शताब्दियों तक यह एक ही धारा चलती रही और इस राष्ट्र का बहुत बड़ा भूभाग भी इसी के परिणाम-स्वरूप हमसे अलग हो गया। और दुर्भाग्य यह रहा कि शताब्दियों तक धर्म के नाम पर इस प्रकार की व्यवस्था और परिस्थितियां रहीं कि समस्या की और किसी का ध्यान ही नहीं गया अपितु अपने-आप को बचाना ही सबसे बड़ा कार्य हो गया था।

सर्वप्रथम ऋषि दयानन्द ने इसके दुष्परिणामों की और ध्यान दिया, लोगों को जागरुक भी किया और इसको ठीक करने का प्रयास भी प्रारम्भ किया। इसीलिए उहोंने सत्यार्थ प्रकाश में संन्यासियों को, जो लाखों की संख्या में केवल भिक्षावृत्ति के लिए देश में घूमते रहते थे, उन्हें कर्तव्य का बोध कराते हुए कहते हैं- **''देखो तुम्हारे सामने पाखण्ड बढ़ते जाते हैं, ईसाई, मुसलमान तक होते जाते हैं। तनिक भी तुमसे अपने घर की रक्षा और दूसरों को मिलाना नहीं बन सकता। बने तो तब जब तुम करना चाहो। ''**

यहाँ पर ऋषि दयानन्द की चिन्ता व चेतावनी केवल ईसाई, मुसलमान होने तक नहीं है, अपितु उससे भी पहले जो हिन्दुओं के अन्दर अनेक पाखण्ड आधाारित मत हैं, उन पर भी है। क्योंकि इन्हीं पाखण्ड मतों के कारण भी अनेकों लोग अपने पूर्वजों की परम्परा को छोड़कर ईसाई, मुसलमान बनते हैं। अर्थात् मत परिर्वतन के सबसे प्रमुख कारण भय, स्वार्थ, प्रलोभन व पाखण्ड का बढ़ना रहा है। ऋषि दयानन्द के अनुयायी, आर्यमत (जो इस देश का ही नहीं अपितु संसार भर का सनातन मत है और हर दृष्टि से पूर्णतः वैज्ञानिक व निभ्रान्त है तथा जिसे हमारे श्रेष्ठ पूर्वज श्री रामचन्द्र व श्री कृष्ण ने भी धारण कर आगे बढ़ाया था) को प्रचारित करने वाले अनेक लोगों द्वारा उनकी इस चिन्ता व चेतावनी को समझकर इस दिशा में कार्य किया। और इस घर वापसी का विधिवत अभियान शुद्धि आन्दोलन के रूप में स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा 1919 में प्रारम्भ किया गया। यदि उनका यह अभियान व्यापक होता तो राष्ट्र के सामने न मजहब के आधार पर बंटने की समस्या आती और न आज असम से पेशावर तक हो रही समस्या व अमानवीय कृत्य होते।

यदि लोगों की घर-वापसी तो कर ली जाए लेकिन उस घर में यदि चारों तरफ निकलने के द्वार ही हों तो

शेष अगले पृष्ठ पर

सम्पादकीय का शेष.....

उस घर-वापसी का कोई अर्थ नहीं रह जाता है। आज हमारे घर में कहीं जातिवाद के नाम पर, कहीं छुआछूत के नाम पर, कहीं भिन्न-भिन्न विचारधाराओं के नाम पर, कहीं भिन्न-भिन्न देवी-देवताओं के नाम पर, कहीं स्वयंभू भगवानों के नाम पर, कहीं अंधविश्वास व अंधभक्ति के नाम पर, कहीं लोगों में व्यसन के नाम पर, कहीं छोटे-छोटे स्वार्थों के नाम पर, कहीं सिद्धान्तहीनता के नाम पर इतने निकास द्वार बने हुए हैं कि घर में आया हुआ व्यक्ति यही नहीं समझ पाता है कि वह अपने को कहां समायोजित करें। वास्तविक परिवर्तन विचार धारा का परिवर्तन होता है। वही परिवर्तन स्थायी होता है, उसी के अनुसार व्यक्ति का परिवर्तन होना चाहिए। भावुकता के आधार पर हो रही छुट-पुट घटनाओं से परिवर्तन तो नहीं, हाँ, प्रतिक्रिया अवश्य होती है।

इस राष्ट्र में घर-वापसी की आवश्यकता तो सभी को है क्योंकि सभी इस राष्ट्र की मूल सनातन वैदिक विचारधारा से भटक चुके हैं, अर्थात् हिन्दु भी अपनी मूल विचारधारा को छोड़कर अलग-अलग राह पकड़े हुए हैं। अतः अन्य लोगों की घर वापसी तो होनी ही चाहिए लेकिन हिन्दुओं को भी घर वापसी की आवश्यकता है। और हिन्दुओं की घर वापसी का अर्थ है उनका आर्य बनना, यही हम सबकी मूल परम्परा है, यही हमारे श्रेष्ठ पूर्वजों (श्रीराम व श्रीकृष्ण)की परम्परा है। ऋषि दयानन्द ने यही प्रारम्भ किया था- लोगों को आर्य बनाना। यही मार्ग है हमारे घर में बन गए अनेकों निकास द्वारों को बन्द करने का। जब हम आर्य होंगे तभी लोगों की घर वापसी सार्थक होगी अन्यथा तो यह रास्ते का एक पड़ाव रह जाएगा। राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा निरन्तर इसी कार्य में संलग्न है- लोगों को आर्य बनाना, जिससे वे अपनी मूल परम्पराओं (आर्य सिद्धान्तों) से जुड़ सकें। और यह आर्य निर्माण किया जाता है- विचार देकर, विद्या देकर, जिससे वे इसके महत्व को समझ सकें और स्थायी रूप से आर्य बन सकें। क्योंकि भावानात्मक परिवर्तन स्थायी नहीं होते हैं। आर्य निर्माण सत्रों में दो दिन तक व्यक्ति को विद्या दी जाती है, उसे जानने का, समझने का, विचार-विमर्श का पूरा अवसर रहता है और उसके पश्चात् भी विवेक निर्णय करता है कि क्या उचित है, क्या उसे करना है, और उसका अपना निर्णय ही मान्य होता है। यही उपाय है लोगों के परिवर्तन का, उन्हें श्रेष्ठ विचार धारा से जोड़ने का, उनकी घर वापसी का, जिससे वह बनता है एक योग्य, सक्षम, सबल व्यक्ति और ऐसे ही व्यक्तियों से बनता है राष्ट्र सक्षम व सबल।

आर्यों, आर्याओं! हम सबका कर्तव्य यही है कि हम स्वयं दृढ़ता के साथ इस पथ पर आगे बढ़ें और अन्यों को भी इस विचारधारा में सम्मिल्लित करें, अधिक से अधिक आर्य बनाएं, जिससे न धर्मान्तरण होगा और न पुनर्धर्मान्तरण की आवश्यकता ही पड़ेगी।

-आचार्य सतीश

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की वेबसाईट पर उपलब्ध

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की वेबसाईट www. aryanirmatrisabha.com व www. aryanirmatrisabha.org से भी पत्रिका को प्राप्त किया जा सकता है। पाठकगण पत्रिका को उपरोक्त साईट से डाऊनलोड कर पढ़ सकते हैं व सत्रों की सूचना भी प्राप्त की जा सकती है।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की मासिक गतिविधियाँ

बिना सिद्धांतों को समझे, उन्हें धारण किए मनुष्य का निर्माण नहीं होता है। राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा निरन्तर वेद द्वारा प्रतिपादित और ऋषि दयानन्द द्वारा व्याख्यायित सिद्धांतों के माध्यम से निर्माण कार्य में संलग्न है। विगत् माह भी महिला व पुरुषों के लिए निम्न आर्य / आर्या निर्माण सत्र लगाए गए।

आर्य प्रशिक्षण सत्र

	स्थान	दिनांक
1.	सैनी धर्मशाला, हिसार, हरियाणा	13-14 दिस.
2.	ब्राह्मण धर्मशाला, जीन्द, हरियाणा	13-14 दिस.
3.	सैन धर्मशाला, महेन्द्रगढ़, हरियाणा	13-14 दिस.
4.	आर्यसमाज, नांगलोई, दिल्ली	13-14 दिस.
5.	आर्यसमाज, शाहबाद, कुरुक्षेत्र, हरियाणा	13-14 दिस.
6.	गुरुकुल चित्तौड़ा झाल, उ० प्र०	20-21 दिस.
7.	आर्य समाज, आर्य नगर, ज्वालापुर, उत्तराखण्ड़,	20-21 दिस.
8.	दयानन्द भवन, सिवाह, पानीपत, हरियाण	20-21 दिस.
9.	डी. ए. वी. इन्टर कॉलेज, टटीरी बागपत, उ० प्र०	27-28 दिस.
10.	आर्यसमाज, तिवड़ा रोड़, मोदीनगर, गाजियाबाद	27-28 दिस.
11.	जे० जे० ईन्टर कालेज, चट्टी चुनार, मिर्जापुर, उ० प्र०	27-28 दिस.

आर्य प्रशिक्षण सत्र

1.	आर्यसमाज, कबलाना, झज्जर, हरियाणा	20-21 दिस.

वास्तविक धर्म

आज जो धर्मान्तरण पर चर्चा चल रही है, उन्हें यही नहीं पता कि धर्म क्या है? धर्म किसे कहते हैं? आज हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आदि को ही धर्म जानते हैं। धर्म का विपरीत शब्द अधर्म है, अब देखते हैं कि यदि हिन्दु धर्म है तो अधर्म क्या है? मुस्लिम यदि धर्म है तो अधर्म क्या है। ऐसे तो झगड़ा हो सकता है। यदि विचार किया जाए तो सृष्टि के आरम्भ में न हिन्दु, न ईसाई, न सिक्ख, न मुसलमान, केवल मानवता ही थी। वास्तविक धर्म हमें मानवता का पाठ ही पढ़ाता है कि सत्य, न्याय, अंहिसा, चोरी, न करना, पाप कार्य न करना, दूसरों की भलाई करना अर्थात् श्रेष्ठ कर्म करना ही धर्म है और इसके विपरीत कर्म करना ही अधर्म है। लेकिन आज यदि एक मुसलमान गाय काटता है तो वह भी अधर्मी है और यदि एक सिक्ख या हिन्दु मुर्गा काटता है तो वह भी अधर्मी ही है। धर्म तो रक्षा करना सिखाता है, लेकिन आज कुछ व्यक्ति अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए धर्म के ठेकेदार बने बैठे हैं या उनको धर्म के विषय में ज्ञान ही नहीं है। वो धर्म के नाम पर क्यों बाँटते हैं? वो मनुष्यता, मानवता का पाठ क्यों नहीं पढ़ाते, वो हमें भलाई करना, न्याय पर चलना क्यों नहीं सिखाते। आओ हम सब मिलकर वास्तविक धर्म को समझें, ये सृष्टि बनी तब केवल मानवता ही थी। स्वार्थ, क्रोध, चोरी, झूठ, अन्याय को त्यागें, यही धर्म सिखाता है। यही वास्तविक धर्म है।

-आर्य अनिल विद्यार्थी

सूचना

सभी आर्यगणों से अनुरोध है कि राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा भिन्न-भिन्न स्थानों पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों सम्बन्धी सूचना पत्रिका के ई-मेल पते :-

krinvantovishwaryam@gmail.com

पर भेंजे साथ ही सम्बन्धित चित्र (फोटो) भी इसी पते पर भेज देंवे जिससे कि उनको समय पर पत्रिका में प्रकाशित किया जा सके

आओ यज्ञ करें!

पूर्णिमा	05 जनवरी	दिन-सोमवार	मास-मार्गशीर्ष	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-आर्द्रा
अमावस्या	20 जनवरी	दिन-मंगलवार	मास-माघ	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-उत्तराषाढ़ा
पूर्णिमा	03 फरवरी	दिन-मंगलवार	मास-माघ	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-पुष्य
अमावस्या	18 फरवरी	दिन-बुधवार	मास-फाल्गुन	ऋतु-वसंत	नक्षत्र-श्रवण/धनिष्ठा

जल्लाद जलालुद्दीन अथवा अकबर महान

-सोनू आर्य, हरसौला, कैथल

प्राचीन काल से ही भारतीय धन सम्पदा, संस्कृति एवं अनुकूल वातावरण सहज ही विदेशी आक्रामणकारियों को आमन्त्रित करते रहे हैं। इन्हीं अनुकूलताओं के परिणाम स्वरूप विभिन्न विदेशी लुटेरे एवं आक्रमणकारी भारत आए एवं स्थाई रूप से यहीं बस गए। उन्हीं लुटेरों में से मुगल शासक भी एक हैं। जैसाकि स्वाभाविक है कि धर्मान्ध शासनकर्ता शासितों के ऊपर अपने धर्म एवं संस्कृति को जबरन थोपते हैं। ऐसा ही मुगलों के द्वारा भारतीय बहुसख्ँयक जनता के साथ किया गया किन्तु इसके बावजूद भी मुगल तिथिवृत्तों के आधार पर लिखे गए इतिहास में उन्हें (मुगलों को) महान एवं विश्व सम्राट आदि उपाधियाँ दी गई हैं। अब यह विचारणीय है कि महान कहे जाने वाले मुगल वास्तव में नैतिकता की कसौटी पर खरे उतरकर महान सिद्ध होते हैं अथवा क्रूर लुटेरे मात्र। विषय विस्तार को ध्यान में रखते हुए हम यहाँ सबसे ज्यादा महान माने जाने वाले मुगल अकबर का ही विवेचन करेंगे। इसी में अन्यों का निष्कर्ष भी आएगा।

अबुल फजल का धोखा- जैसाकि स्वाभाविक है कि दरबारी लेखक आश्रयदाता का ही यशोगान बढ़ा-चढ़ा कर पेश करेगा। अबुल फजल ने भी अकबरनामा में अकबर के घृणित एवं निन्दनीय कार्यों को तोड़-मरोड़कर श्रेष्ठ सिद्ध किया है। इसी कारण अनेक इतिहास विश्लेष्कों ने अकबरनामा के विश्लेषण के उपरान्त उसे चाटुकारों का सरदार कहा है, अत: हम अन्धानुकरण की प्रवृत्ति छोड़ कुछ अकबरनामा एवं कुछ अन्य ग्रन्थों के आधार पर निष्पक्ष विवेचन करते हैं।

अकबर का व्यक्तित्व- अकबर के व्यक्तित्व के सही आकलन हेतु उसके वंशानुक्रम एवं पारिवारिक परम्पराओं के अध्ययन के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि उसकी रगों में क्रूर अत्याचारियों का खून था। इतिहासकार विन्सेन्ट के अध्ययन से हमें पता चलता है कि अकबर अत्यन्त कुरूप एवं भद्दा व्यक्ति था जबकि चाटुकार अबुल फजल उसे अत्यन्त सुन्दर व्यक्ति बताता है। स्मिथ कहता है कि अकबर औसत डील-डौल का व्यक्ति था। ऊंचाई में लगभग 5 फुट, चौड़ी छाती, पतली कमर, लम्बे बाजू, पैर भीतर को झुके हुए, चलते समय वह बाएं पैर को घसीटता था मानो लंगड़ा हो। सिर दाएं कन्धे की ओर झुका हुआ, नाक छोटी जिसकी बीच की हड्डी उभरी हुई, नथुने जैसे क्रोध में फूले हों। मटर के दाने के आकार का एक मस्सा उसके उपरी होंठ को नथूने से जोड़ता था और उसका रंग काला था। वह निरक्षर अंगूठा छाप था। संक्षेप में कहें तो अकबर कुरूपत्तम व्यक्ति था जबकि इतिहास में अन्धानुकरण से उसके अनेकों गुणों का बखान किया जाता है।

नशेड़ी एवं कामासक्त- जैसाकि अकबर की पारिवारिक परम्परा से विदित है कि उसके पूर्वज बाबर आदि शराब के आदि थे, वंशानुसार अकबर भी वैसा ही था। तेज नशीले पदार्थों का वह घोर व्यसनी था। स्वयं जहांगीर कहता है कि मेरा पिता शराब पिये हो या नहीं वह मुझे सदैव शेखु बाबा पुकारता है जो सिद्ध करता है कि अकबर प्राय: नशे में धुत रहता था। हांलाकि चाटुकार अबुल फजल ने अकबर को नशेड़ी प्रदर्शित नहीं किया, किन्तु अकबर का दरबारी पादरी अक्वीवा कहता है कि प्राय: अकबर आवश्यकता से अधिक शराब पीता था। नशीली ताड़ की एवं अन्य तेज नशीले पदार्थों से बनी शराब का अकबर आदि था। जब शराब उसे नहीं मिलती थी तो वह चटपटी अफीम खाता था। यही नहीं स्वयं अबुल फजल कहता है कि अकबर के हरम में 5000 से ज्यादा महिलाएं हैं एवं शहंशाह ने महल के पास ही शराब की दुकान स्थापित की है। इस पर इतनी वेश्याएं आती हैं कि उनकी गिनती करना कठिन है। शहंशाह ने स्वयं प्रमुख वेश्याओं को बुलाया एवं उनसे पूछा कि उनका कौमार्य किसने भंग किया।

विन्सेन्ट स्मिथ पेज 163 पर एक घटना का उल्लेख करता है कि भगवान दास के सम्बंधी जयमल को एक यात्रा पर भेजा गया। उसके जिन्दा न रहने की सोचकर उसकी पत्नी विधवा सती होने की तैयारी करने लगी। अकबर ने उसे बन्दी बनाया जो यह दर्शाने हेतु पर्याप्त है कि विधवा को उसके हरम में ठूंस दिया गया। यही नहीं मीना बाजार नाम कि एक प्रथा भी थी जिसके अनुसार नव-वर्ष पर सब महिलाओं को अकबर द्वारा चयन हेतु उसके सामने से समूह में निकाला जाता था।

हत्यारा एवं क्रूर- स्मिथ ने इतिहासकार व्हिलर के कथन का वर्णन किया है कि अकबर ने सवेतन एक कर्मचारी रखा था जो अकबर से अप्रसन्न व्यक्तियों को जहर देता था। स्मिथ ने अनेक लोगों का वर्णन किया है जिनको अकबर के द्वारा जहर एवं फांसी से मरवाया गया। ग्वालियर के कामरान के बेटे का वध। इकबालनामानुसार शेख अब्दुल नबी को अकबर ने अबुल फजल द्वारा मरवाया। एक के बाद एक उन सब मुल्लाओं की मौत हुई जिन पर उसे शक था। यही नहीं मासूम फरगुन्दी, हाजी इब्राहिम, बैरम खाँ, जयमल की सन्दिग्ध अवस्था में मौत का इल्जाम भी अकबर पर ही है। उसके साथ-साथ हिन्दू तीर्थ स्थल थानेश्वर में संन्यासी दो भागों में बंटे थे। एक ने शिकायत में कहा कि दूसरे उनको बैठने का स्थान नहीं देते जिससे वे दान लेने से वंचित हैं। बादशाह ने कहा कि युद्ध करके फैसला कर लो। जब युद्ध में एक का पलड़ा भारी हुआ तो मुगल सैनिक बाकी सब पर टूट पड़े और सब संन्यासियों को एक-एक करके मौत के घाट उतारा। इसी तरह हल्दी घाटी जंग में यह पहचानना कठिन हो गया कि कौन राजपूत राणा प्रताप की सेना का व कौन अकबर की सेना का है, तो अकबर ने सेनापति को आदेश दिया की चाहे किसी भी पक्ष का राजपूत मरे फायदा इस्लाम का ही है, अत: अन्धाधुन्ध मौत के घाट उतारो। इस घटना से उस भ्रम का पर्दा उठता है कि अकबर राजपूत हितैषी था।

नवरत्नों की भ्रान्ति- जैसाकि मुगल शासकों की प्रवृत्ति हमारे राजपूती भवनों के अधिग्रहण एवं नकल की रही है, उसी के अनुरूप नवरत्न जो महाराज विक्रमादित्य से संबन्धित थे, को भी चाटुकार लेखकों द्वारा अकबर से जोड़ दिया गया है। इतना ही नहीं, इतने अधिक प्रचारित व्यक्ति भी इतने योग्य न थे जितना कि उन्हें प्रदर्शित किया जाता है। टोडरमल ने जनता से धन वसूली हेतु ऐसी प्रणाली बनाई जिसके द्वारा किसानों को कौड़े लगाए जाते थे अथवा उन्हें पत्नी और बच्चे बेचने पड़ते थे।

अबुल फजल निर्लज्ज चापलूस था। फैजी मामूली सा कवि था। बीरबल युद्ध में हत हुआ। माना जाता है कि उसे एक जागीर दी गई थी जिसका सुखभोग कभी नहीं कर सका। उसके नाम जो हाजिर जवाबी कही जाती है- अकबर-बीरबल के लतीफे, वह किसी भारतीय राजपूत से जुड़ी घटनाएं हैं जिन्हें जबरन अकबर से जोड़ा गया है। शाह मन्सूर को स्वयं अकबर के आदेश पर अबुल फजल ने मारा। चित्रकार दसवन्त ने खुद छुरा घोंपकर आत्महत्या की एवं तानसेन एकमात्र महान संगीतज्ञ जो मध्यकालीन दरबारों से जुड़ा रहा है किन्तु उसकी उपलब्धि में अकबर भागीदार नहीं है। क्योंकि अपने आश्रयदाता राजपूत द्वारा विकट परिस्थितियों में अकबर को सौंपने से पूर्व ही वह एक प्रख्यात संगीतज्ञ बन चुका था। अब विचारणीय है कि ये साधारण व्यक्ति यदि वास्तव में नवरत्न होते तो क्या इनकी इतनी दुर्गति आश्रयदाता के रहते होती? इसी तरह चित्रकला, वास्तुकला आदि का मुगलकाल में विकास मानना केवल अन्धानुकरण एवं भ्रम मात्र है, वास्तव में मध्यकालीन भवन एवं सब घटनाएं मुगलपूर्व काल की हैं। जहांगीर की न्याय जंजीर राजपूत शासक अनंगपाल की नकल मात्र थी।

धर्मान्ध अकबर- धर्म से जोड़कर जो अकबर का यश इतिहास में गाया जाता है वह भी एक भ्रम मात्र है क्योंकि एक अंगूठा छाप व्यक्ति धर्म के गूढ़ विषयों का रत्ति भर भी चिन्तन नहीं कर सकता। नया मत खड़ा करने के पीछे अकबर का उद्देश्य स्वयं को लोगों के बीच ईश्वर सिद्ध करना था। ईसाई पादरी

शेष पृष्ठ 4 पर..

पृष्ठ 3 का शेष

जोवियर ने अकबर के चरणों को धोकर जन सामान्य को पानी पिलाने का वर्णन किया है, जो स्पष्ट करता है कि स्वयं को अकबर पैगम्बर विख्यात करवाना चाहता था। एक झूठ यह भी प्रचारित है कि सम्राट बनते ही उसने हिन्दूओं से जजिया कर हटा लिया था। किन्तु वास्तविकता इसके बिल्कुल विपरीत है। रणथम्भोर की संधि की शर्त में बून्दी के शासक को जजिया कर से विशेष छूट देने की व्यवस्था की गई थी। जैनमुनि हीर विजयसूरि की यात्रा के सम्बन्ध में हम सुनते हैं कि उसने जजिया कर से मुक्ति के लिए कहा था। ये बातें सिद्ध करती हैं कि जजिया हटाया नहीं गया था अन्यथा लोग बार-बार जजिया कर हटाने की प्रार्थना ही क्यों करते।

राजपूतों से सम्बन्ध धोखा मात्र- अकबर की सर्वाधिक महानता राजपूतों से अच्छे सम्बन्ध बनाने के लिए गाई जाती है किन्तु उपरोक्त तथ्यों की भांति यह भी सत्य से उलट है। हम अकबर द्वारा जयपुर राजघराने की कन्या को अपने आधीन कर लेने का उदाहरण लेते हैं।

अकबर के सेनापतियों में से एक शर्फुद्दीन ने जयपुर नरेश भारमल के विरुद्ध अनेक आक्रमण किये। इस युद्ध में भारमल के तीन भतीजे पकड़ लिये गए। डॉ॰ श्रीवास्तव ने लिखा है कि भारमल विवश था एवं इसी असहाय अवस्था में उसने भतीजों की मुक्ति के लिए राजकुमारी को अकबर को सौंपना पड़ा। इसके साथ-साथ हर्जाने के रूप में बहुत बड़ी धन राशि भारमल को देनी पड़ी। स्पष्ट है कि इस शर्मनाक घटना को तोड़-मरोड़ कर विवाह के रूप में एवं जुर्माने की राशि को दहेज के रूप में वर्णित किया गया है। उसी प्रकार जोधाबाई की विवशता को विवाह का नाम दिया गया। तथ्य यह भी है कि यदि धार्मिकता, सहिष्णुता हेतु अकबर ने यह किया तो किसी रिश्तेदार या अपनी पुत्री का विवाह किसी राजपूत संग क्यों न किया? इसके अलावा यह भी सर्वविदित है कि अकबर के दरबारी सब राजपूत एक-एक कर मारे गए या अकबर द्वारा पारिवारिक अथवा धार्मिक हस्तक्षेप के कारण उसे छोड़कर चले गए। अपने हिन्दू देवताओं की मूर्तियों के अकबर द्वारा अपमान के कारण टोडरमल त्यागपत्र देकर चला गया था।

महाराणा प्रताप एवं अकबर की लड़ाई की सही समझ ही यह समझने हेतु पर्याप्त है कि महान अकबर एक निकृष्ट व्यक्ति था। हर कोई उनमें से एक को ही अन्याय, अत्याचार एवं दमन का प्रतिनिधि मानेगा। महाराणा प्रताप तो मातृभूमि की रक्षा हेतु लड़ने वाला भारतवीर था, अत: वह अन्यायी व अत्याचारी नहीं हो सकता। अत: स्वत: सिद्ध है कि निरंकुश नरसंहार एवं अन्य अपराधों का दोषी अकबर ही है। अत: निर्विवाद सत्य यही उभरता है कि जैसे संबन्ध इतिहास में राजपूतों के साथ दिखाए जाते हैं वास्तव में वे संबन्ध अकबर एवं राजपूतों के बीच कभी थे ही नहीं। नैतिकता की किसी भी कसौटी पर अकबर जरा भी खरा नहीं उतरता, किन्तु विडम्बना यही है कि महाराणा प्रताप जैसे राष्ट्रभक्त वीर राजपूत की उपेक्षा कर इतिहासकार क्रूर व दगाबाज अकबर को महान सिद्ध करने में ज्यादा गर्व महसूस करते हैं।

उपरोक्त विवेचन के उपरान्त यह कहा जा सकता है कि अकबर कभी महान नहीं बन सका, अपुति उसके चाटुकार इतिहासकारों द्वारा ही ऐसा दर्शाया गया है। अन्यथा तो उसके कुकर्मों के अनुरूप उसे विश्व का निकृष्टत्तम व्यक्ति कहा जाना ज्यादा उचित व उपयुक्त होगा।

पोपलीला

- आचार्य अशोकपाल

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर 5000 वर्ष पूर्व समय पर्यन्त पृथ्वी पर आर्यों का सार्वभौमिक चक्रवर्ती साम्राज्य था एवं अपना आर्यावर्त देश विश्व का मार्गदर्शन करता था। चारों और सुख-समृद्धि-वैभव, सत्य-न्याय एवं निष्पक्षता का वास था। सभी जन 'ओम्' के उपासक थे और वेदाज्ञा के अनुसार सबका जीवन शुद्ध एवं पवित्र था। जो वेद विरुद्ध नास्तिक बन पोपलीला चलाने की कोशिश करता था, उसे उचित दण्ड दिया जाता था जैसे श्री रामचन्द्र जी के समय रावणादि और श्री कृष्ण जी के समय कंसादि को।

महाभारत के युद्ध के बाद क्षत्रियों की अति हानि से वेद-विद्या का लोप हो गया। पोपों ने जनता को लूटना शुरु कर दिया, तरह-तरह की पोपलीलाओं का चलन प्रारम्भ हो गया। हजारों वर्षों तक पोपजी वेश बदल-बदल कर पोपलीला चलाते रहे और ईश्वर के स्थान पर अपनी महता बता जनता को ठगते रहे। ऐसे काल में ऋषि दयानन्द ने हम सब को पोपों के खूनी पंजों से बचाने के लिए घनघोर संघर्ष किया। सहस्रों वर्षों के बाद वेदमत की पुन: प्रतिस्थापना की और केवल मात्र 'ओम्' को उपास्यदेव बताया। ऐसे में पोपों ने ऋषि के विरुद्ध षड़यन्त्र रचे, उन्हें मारने और मरवाने की लगातार कोशिशें की जाती रही। पर सत्यार्थ प्रकाशी कभी घबराया नहीं, रुका नहीं और इस धर्मयुद्ध में बलिदान हो गया। ऋषि दयानन्द के संघर्ष एवं बलिदान से प्रेरित हो, राष्ट्रभक्तों ने पोपों से देश को स्वतन्त्रता दिलवाने के लिए उपक्रम रचे, जेल गये, अमानवीय यातनायें झेली, फांसी पर झूल गये।

स्वतन्त्रता सेनानियों के बलिदान से देश को राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त हुई, पर आज भी अपना देश पोपलीला का शिकार है। आसाराम, रामपाल और निर्मल बाबा जैसे कितने की पोप (चारों ओर देखो!) अपने स्वार्थ की रोटियां सेक रहे हैं। सभी ने अपने-अपने वेटिकन सिटी (डेरे) बना रखे हैं और भोली-भाली जनता को जाल में फांसने के लिए तरह-तरह के हथकण्डे अपना रहे हैं। पोलिटिक्स मौन है। उसे राज जो करना है। मिडिया वृत्ति व टी॰आर॰पी॰ तक सीमित है। ज्युडिशियरी की अपनी सीमा है।

फिर कौन बचाएगा हमें इन रक्त-पिपासु पोपों से? ये निशाचर स्वयं तो डूबते हैं, हमें भी डुबो रहे हैं। फिर इस भवसागर से पार होने का उपाय कौन बताए?

मित्रो! जिस ऋषि के संघर्ष व बलिदान ने अमर बलिदानी लाला लाजपतराय, दिल्ली की जामा मस्जिद से वेद मंत्र गुंजाने वाले निर्भयक संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द, क्रान्तिगुरु पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह के बलिदानी परिवार को प्रेरित किया; उन्होंने हमें इन पोपों से मुक्ति, आजादी का मार्ग भी दिखाया है। ऋषि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में इन पोपों एवं इनकी पोपलीलाओं की बखिया उधेड़ कर रख दी और शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नत्ति हेतु मार्ग प्रशस्त किया। जन-जन के विकास के लिये 'आर्यसमाज' संगठन की नींव रखी, जिसमें केवल 'ओम्' की उपासना, वेदाज्ञा, धर्म का पालन और समाज के महत्व पर अति बल दिया। आज भी जन-जागरण हेतु आर्यसमाज एवं अन्य आर्य संस्थाओं के द्वारा 'आर्य प्रशिक्षण सत्रों', गोष्ठियों, सभाओं व शिवरों का अयोजन करवाया जाता है। आइये! 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़कर, आर्य प्रशिक्षण सत्रों में सम्मिलित हों, सत्य-असत्य का निर्णय करनेहारी मेधाबुद्धि प्राप्त करें। आर्य बन स्वयं पोपों, पोपलीलाओं से बचें एवं जन-जन को बचायें। यही मुक्ति का आधार है।

संध्या काल

माघ मास, शिशिर ऋतु, कलि-5115, वि. 2071 (06 जनवरी 2015 से 03 फरवरी 2015)		फाल्गुन मास, वसंत ऋतु, कलि-5115, वि. 2071 (04 फरवरी 2015 से 05 मार्च 2015)
प्रात: काल: 6 बजकर 00 मिनट से	(6.00 A.M.)	प्रात: काल: 6 बजकर 00 मिनट से (6.00 A.M.)
सांय काल: 6 बजकर 00 मिनट से	(6.00 P.M.)	सांय काल: 7 बजकर 00 मिनट से (7.00 P.M.)

रामप्रसाद बिस्मिल व स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

आर्यसमाज रोहिणी सेक्टर 23-24 द्वारा दिनांक 21 दिसम्बर को महान क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल और स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस बडे उत्साह के साथ उनको श्रद्धान्जलि देते हुए मनाया गया। कार्यक्रम में आर्य/आर्याओं के साथ-साथ स्थानीय नागरिकों ने भी बढ-चढ़ कर भाग लिया। कार्यक्रम का प्रारम्भ प्रात:काल यज्ञ के साथ हुआ। यज्ञ को आचार्य लोकेन्द्र शास्त्री जी व आर्ष गुरुकुल टटेसर-जौन्ती, दिल्ली के ब्रह्मचारियों ने सम्पन्न कराया, आचार्य लोकेन्द्र शास्त्री जी ने वैदिक संस्कृति की परम्परा में हवन की महत्ता को लोगों को समझाया कि हवन करने से हमारी दैनिकचर्या में गुणों और व्यवहार में दिन-प्रतिदिन शुभ विचारों की वृद्धि होती है। शास्त्री जी ने कहा कि हवन व वैदिक ग्रन्थों के स्वाध्याय करने वाले परिवार में समृद्धि, धन, वैभव और सुयोग्य संतान की प्राप्ति होती है जिससे परिवार, समाज और राष्ट्र की प्रगति होती है।

आगे का कार्यक्रम वैदिक राष्ट्र प्रार्थना के साथ प्रारम्भ हुआ। इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता आचार्य हनुमत् प्रसाद जी रहे। आचार्य जी ने अपने ओजस्वी व्याख्यान से आर्यों को कृथार्त किया। आचार्य जी ने क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल जी के बारे में बताते हुए युवाओं को उनके संघर्ष, उनकी विचारधारा, उनके अनुभव और लेखन से परिचित कराया कि गुलामी के उस दौर में क्रान्तिकारियों के प्रेरणा स्रोत रहे रामप्रसाद बिस्मिल का जीवन कैसे एक साधारण बालक से महान क्रान्तिकारी का बना जो बुद्धि, बल, विवेक के साथ राष्ट्रभक्ति से युक्त था। उनके इन गुणों के पीछे आर्यसमाज की दी हुई शिक्षा थी जिसने अंग्रेज शासन की नींव को ही हिला डाला। अंग्रेजों को आभास दिला दिया की भारत माता के वीर पुत्र इस देश को और गुलामी की जंजीरों में नहीं रहने देगें।

आचार्य हनुमत् प्रसाद जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के देश को अतुल्य योगदान और राष्ट्र को समर्पित जीवन के विषय में भी उनके संघर्ष से परिचित कराया कि कैसे दुर्गुणों की खाई में से अपने आप को निकाल कर आर्यसमाज की शिक्षा से हमारी ऋषि परम्पराओं की शिक्षा पद्धति के अनुरूप भारत में गुरूकुलों की स्थापना की, जाति-पाति का घोर विरोध किया और कैसे कठिन परिस्थितियों में धर्म शुद्धि का आन्दोलन चलाया और लाखों विधर्मियों को फिर से शुद्ध किया। अन्त में स्वामी दयान्नद के सपनों को साकार करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना जीवन राष्ट्र के लिए बलिदान कर दिया।

आचार्य हनुमत् प्रसाद जी ने वर्तमान में देश-विदेश में चल रही विकट समस्याओं से मचती उथल-पुथल और उनके भारत भूमि पर पड़ने वाले असर का भी विस्तारपूर्वक विवेचन किया। पाकिस्तान के पेशावर स्कूल में हुए आतंकवादी हमले पर गहरा शोक व्यक्त किया। आचार्य जी ने कहा कि जो देश सांपों को पालता और जन्म देता रहा है वो आज अपने मासूम बच्चों की मौत पर कितना दु:खी है, लेकिन उन्हीं आतंकवादियों से सीमापर कितने ही मासूम बच्चों को मरवाता रहा है तब तो कभी उनकी लाशों पर मातम नहीं मनाया, आज अपने बच्चों पर गोली चली तो आतंकवाद पालने वाले आतंकवाद को खत्म करने की बात करते हैं, जो एक दिखावा मात्र है। आचार्य जी ने कहा कि आतंक के देश के लोगों की पृष्ठभूमि ही हत्यारों की है जिसे वे अपना धर्म मानते हैं। बेजुबान, मासूम, सुन्दर, भोले पशु-पक्षियों को अपने धर्म के नाम पर कुर्बनी देकर अपना भोजन बना लेते हैं, अरे ईश्वर ने जिस जीव को जीने का अधिकार दिया उस जीव का जीवन ये हत्यारे हर लेते हैं और कहते हैं इनकी कुर्बनी का हक अल्लाह ने दिया है- ये जीव शैतान का रूप हैं इन्हें हलाल करो। भला कोई जीव भी शैतान का रूप हो सकते हैं क्या ये जीव-जन्तु निर्दोषों का खून बहाते हैं? क्या ये गरीबों पर अत्याचार करते हैं? क्या ये दूसरे की जमीन छीनते हैं? क्या ये खून का डर दिखाकर सत्ता और धर्म बदलवाते हैं? रोज इन्हें हलाल कर तड़पा-तड़पाकर मारते

इस व्याख्या की विशेषता यह है कि इसमें गुरुदत्त विद्यार्थी द्वारा उपनिषद् के व्यवहारिक पक्ष को प्रस्तुत किया गया है जिससे कि हम उपनिषद् के दिए गए सन्देश का न केवल आध्यात्मिक जीवन में लाभ उठा सकते हैं बल्कि उसे सामान्य व्यवहार में लाकर अपने जीवन को उपयोगी बना सकते हैं, धर्म के वास्तविक स्वरूप को जान सकते हैं व उसे व्यवहार में ला सकते हैं। इसकी भाषा थोड़ी कठिन है क्योंकि गुरुदत्त विद्यार्थी अत्यन्त प्रतिभा के धनी थे। इसलिए इस व्याख्या को समझने में थोड़ा परिश्रम करना पड़ता है व कई बार अध्ययन आवश्यक है। लेकिन एक बार समझ में आने के बाद यह हमारे लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होता है। ईशोपनिषद् हमारे आर्ष ग्रन्थों में एक उच्च कोटि का ग्रन्थ है अत: इसका समझना, जानना व जीवन में धारण कर उपयोगी बनाना हमारे लिए अत्यन्त आवश्यक व उपयोगी है। और इस कार्य में पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी की यह व्याख्या हमारे लिए सहायक सिद्ध होगी।

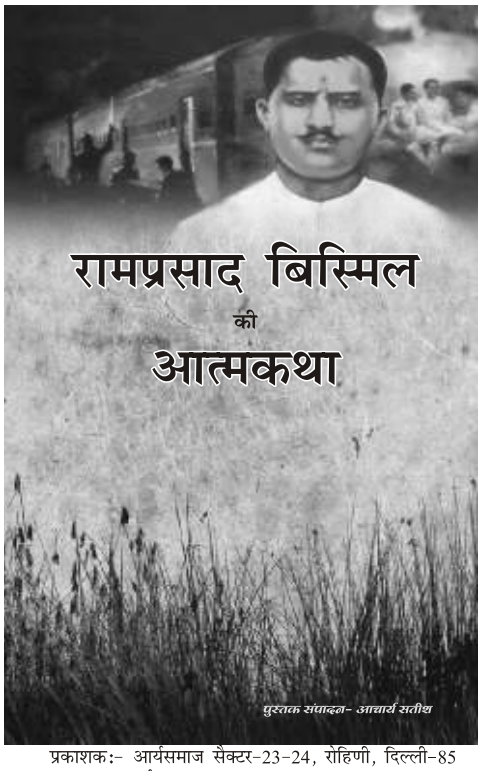

प्रकाशक:- आर्यसमाज सैक्टर-23-24, रोहिणी, दिल्ली-85
सम्पर्क सूत्र-9350945482, 9810485231

पुस्तक-परिचय

रामप्रसाद बिस्मिल की यह आत्मकथा एक आर्यसमाजी का निरन्तर उग्र बनते क्रान्तिकारी के रूप में रूपान्तरण का एक अनोखा उदाहरण है। आर्यसमाज के एक संन्यासी सोमदेव के सम्पर्क में रामप्रसाद किशोरावस्था में आए और उनसे अत्यन्त प्रभावित हुए। सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर तो उनका जीवन ही बदल गया और वे राष्ट्र को समर्पित हो गये, सब अवगुणों को छोड़ दिया। स्वामी सोमदेव को वे अपना गुरु मानते थे। मृत्यु के समय तक धैर्य बनाए रखकर अन्यों के शिक्षार्थ आत्मकथा लिखने का कार्य उनके द्वारा जो किया गया यह उनको आर्यसमाज के सिद्धान्तों की ही देन थी।

रामप्रसाद बिस्मिल अत्यन्त प्रतिभा के धनी थे। अनेक पुस्तकों का लेखन उनके द्वारा किया गया। कई बार पुस्तकों का लेखन क्रान्तिकारी आन्दोलनों के लिए धन एकत्रित करने के लिए किया गया। अपनी प्रतिभा का इससे बढ़कर और क्या प्रयोग वे कर सकते थे। उनकी लेखनी इतनी ओजस्वी थी कि उनकी पुस्तकें छपते ही ब्रिटिश सरकार द्वारा जब्त कर ली जाती थी। उनकी लेखन क्षमता विकसित करने का काम स्वामी सोमदेव जी ने ही किया था।

अमेरिका में सक्रिय भारतीय क्रान्तिकारियों के पत्र गदर में भी उनकी रचनाएं छद्म नाम से छपती थी। क्रान्ति की भावना को व्यापक करने के लिए उनके द्वारा 'अमेरिका की स्वतन्त्रता', 'बोलशेविकों की करतूत', 'कैथेराइन या स्वतन्त्रता की देवी' व 'मन की लहर' के नाम से गीतमाला आदि कई पुस्तकों की रचना की गई।

रामप्रसाद बिस्मिल द्वारा लिखित आत्मकथा निज जीवन की एक छटा के नाम से प्रकाशित हुई। यह एक ऐसी पुस्तक है जो हर नवयुवक को पढ़नी चाहिए क्योंकि उस काल के इतिहास के साथ यह शिक्षा प्रदान करने का भी कार्य करती है, स्वयं रामप्रसाद बिस्मिल अपनी असफलता का एक कारण क्रान्तिकारियों के अनुभवों का प्रकाशित न होना मानते थे, जिससे क्रान्तिकारी युवक पूर्ववर्तियों के अनुभव ग्रहण नहीं कर पाते थे और इस कमी की पूर्ति के लिए ही उन्होंने इस पुस्तक को लिखा। रामप्रसाद बिस्मिल द्वारा इस पुस्तक में अनेक स्थानों पर बहुत सी घटनाओं तथा व्यक्तियों का संकेतमात्र उल्लेख किया है क्योंकि उस समय क्रान्तिकारी आन्दोलन के सम्मुख ऐसी परिस्थितियाँ थी कि उनके खुलासे से उन व्यक्तियों पर विपरीत प्रभाव पड़ने की संभावना थी।

राम प्रसाद बिस्मिल की यह आत्मकथा भारतीय क्रान्तिकारी इतिहास का सर्वाधिक विचारपूर्ण दस्तावेज है। यह उनके लगभग 11 वर्ष के क्रान्तिकारी जीवन का लेखा-जोखा है जिसमें इतिहास की दो महत्वपूर्ण घटनाओं का सीधे उनसे जुड़ा होने के कारण सही व सटीक वर्णन उनके द्वारा दिया गया है। मैनपुरी षड़यन्त्र केस, जिसमें गेंदालाल दीक्षित मुख्य अभियुक्त थे, रामप्रसाद बिस्मिल के जीवन को प्रभावित कर उन्हें क्रान्तिकारी बनाने में उनका बड़ा योगदान था और बिस्मिल स्वयं क्रान्ति के क्षेत्र में उन्हें अपना मार्गदर्शक मानते थे। इस आत्मकथा में उन्होंने दीक्षित जी के त्याग व बलिदान के बारे में जानकारी दी है, वह अन्यथा प्राप्त होनी असम्भव थी।

मैनपुरी षड़यन्त्र केस में शामिल होने के कारण ही रामप्रसाद बिस्मिल को कई वर्ष निर्वासित जीवन जीना पड़ा था। इस समय वे ग्वालियर के अपने पैतृक गांव में जाकर खेती करने लगे थे। आम माफी के बाद वे फिर क्रान्तिकारी आन्दोलन में सक्रिय हो गए और बड़े संगठन का निर्माण तथा नेतृत्व किया और पहली बार क्रान्तिकारी आन्दोलन एक संगठित दल के रूप में कार्य करने लगा जिसे बाद में चन्द्रशेखर आजाद और भगत सिँह ने संभाला।

1921 के असहयोग आन्दोलन की निराशाजनक समाप्ति से हुए रिक्त स्थान को भरने का कार्य काकोरी के शहीदों द्वारा किया गया। 9 अगस्त 1925 को घटित इस घटना में 10 युवक शामिल थे जिनका नेतृत्व रामप्रसाद बिस्मिल कर रहे थे। यह ब्रिटिश सरकार को सीधी चुनौती थी। धर-पकड़ के बाद गिरफतारियां हुई तथा 18 महीने चले मुकद्दमें के बाद चार युवकों रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, ठाकुर रोशन सिंह व अशफाकउल्ला खाँ को फांसी दी गई। अंग्रेज सरकार का अत्याचार देखिए कि जो रोशन सिंह न तो डकैती में शामिल थे और न ही उन पर हत्या का आरोप था, उन्हें भी फांसी दे दी गई। अशफाकउल्ला खाँ को रामप्रसाद ने तराशा था यह उनकी योग्यता का परिचायक है तथा पूरे क्रान्तिकारी आन्दोलन का एक विलक्षण उदाहरण है।

यह आत्मकथा उनके जीवन संघर्ष का ही लेखा-जोखा नहीं है बल्कि इसमें मैनपुरी के जमाने से लेकर असहयोग आन्दोलन और फिर काकोरी रेल ड़कैती की रोमांचकारी घटना तक की तस्वीरें हैं, जिससे उस पूरे युग को समझने और उस काल के वैचारिक संघर्ष की रूप-रेखा हमें देखने को मिलती है कि किस प्रकार क्रन्तिकारी पूरे राष्ट्र को आन्दोलित करना चाहते थे। उसके लिए वे आम जनों को तैयार कर उस संघर्ष से जोड़ना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने कार्य भी प्रारम्भ किया लेकिन तात्कालिक परिस्थितियां उन्हें क्रान्ति के सीधे मार्ग पर ले गई और उनका वह कार्य छूट गया। वे क्रान्तिकारी संग्राम को जनआन्दोलन का रूप देना चाहते थे इसलिए उन्होंने धनिकों के यहां डकैती की अपेक्षा सरकारी खजाने को लूटना ज्यादा उपयुक्त समझा जिससे निर्रथक नर-हत्याएं न हों। कितने धनाभाव में क्रान्तिकारी रहते थे, संघर्ष भी था तो सबसे शक्तिशाली सरकार से, इसलिए हथियारों आदि के लिए धन तो चाहिए ही था। सहायता कहीं से मिलती नहीं थी। सभी संसाधन स्वयं ही जुटाने पड़ते थे इसलिए डकैती जैसा कार्य भी करना पड़ता था।

बिस्मिल जी ने यह आत्मकथा जेल के फांसीघर में बैठकर उन कठिन परिस्थितियों में लिखी है जहां एक ओर साम्राज्यवादी पुलिस का पहरा तथा दूसरी ओर फांसी का क्रूर फंदा था। 19 दिसम्बर 1927 को बिस्मिल को फांसी हुई और दिसम्बर के प्रथम सप्ताह से 16 दिसम्बर तक वे इस आत्मकथा को लिखते रहे। ऐसी परिस्थिति में कुछ भी कलमबन्द करना एक निर्भीक, स्थिरचित और अत्यन्त संतुलित मस्तिष्क का ही कार्य हो सकता है, जो गहराई से जीवन के अर्थ को समझ चुका हो। बिस्मिल इसमें सफल हुए और यह एक ऐतिहासिक दस्तावेज ही नहीं बल्कि नई पीढ़ी के लिए भी उपयोगी बना, जिसे न केवल भविष्य में क्रान्तिकारी आन्दोलनों को चलाना था अपितु उन्हें लक्ष्य तक भी पहुँचाना था। उनके द्वारा दी गई नसीहतें आज भी उन लोगों के लिए उपयोगी हैं जो राष्ट्रसेवा में अग्रसर हैं।

-आचार्य सतीश

रामप्रसाद बिस्मिल की आत्मकथा से...

यह मेरा दृढ़ निश्चय है कि मैं उत्तम शरीर धारण कर नवीन शक्तियों सहित अति शीघ्र ही पुनः भारतवर्ष में ही किसी निकटवर्ती सम्बन्धी या इष्ट मित्र के गृह में जन्म ग्रहण करूँगा, क्योंकि मेरा जन्म-जन्मान्तर उद्देश्य रहेगा कि मनुष्य मात्र को सभी प्रकृति पदार्थों पर समानाधिकार प्राप्त हो। कोई किसी पर हुकुमत न करे। सारे संसार में जनतंत्र की स्थापना हो। वर्तमान समय में भारतवर्ष की अवस्था बड़ी शोचनीय है। अतएव लगातार कई जन्म इसी देश में ग्रहण करने होंगे और जब तक कि भारतवर्ष के नर-नारी पूर्णतया सर्वरूपेण स्वतंत्र न हो जाएँ, परमात्मा से मेरी प्रार्थना होगी कि वह मुझे इसी देश में जन्म दे, ताकि उसकी पवित्र वाणी-'वेदवाणी' का अनुपम घोष मनुष्य मात्र के कानों तक पहुँचाने में समर्थ हो सकूँ। सम्भव है कि मार्ग-निर्धारण में भूल करूँ, पर इसमें मेरा विशेष दोष नहीं, क्योंकि मैं भी तो अल्पज्ञ जीव मात्र ही हूँ। भूल न करना केवल सर्वज्ञ से ही सम्भव है। हमें परिस्थितियों के अनुसार ही सब कार्य करने पड़े और करने होंगे। परमात्मा अगले जन्म में सुबुद्धि प्रदान करे ताकि मैं जिस मार्ग का अनुसरण करूँ, वह त्रुटि रहित ही हो।

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

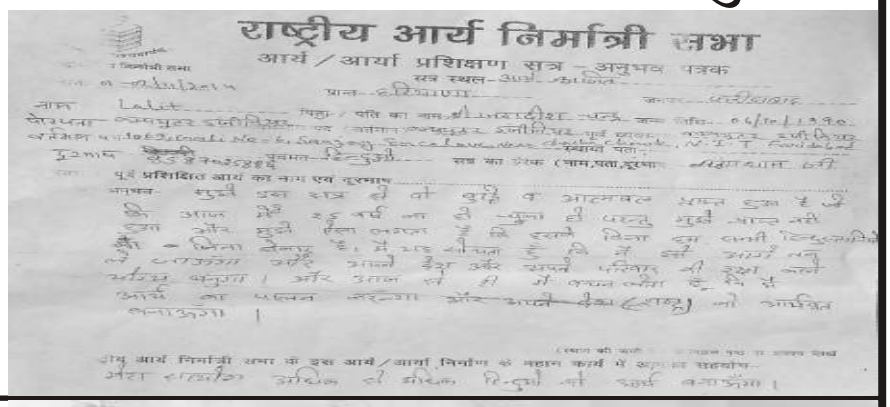
राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा
आर्य/आर्या प्रशिक्षण सत्र - अनुभव पत्रक

मुझे इस सत्र से वो बुद्धि व आत्मबल प्राप्त हुआ है जो कि आज मैं 25 वर्ष का हो चुका हूँ, परन्तु मुझे वह कभी प्राप्त नहीं हुआ। मुझे ऐसा लगता है कि इसके बिना हम सभी हिन्दुस्तानियों का जीना बेकार है। मैं यह सोचता हूँ कि मैं इन सिद्धान्तों को आगे तक ले जाऊँगा और अपने देश और अपने परिवार की रक्षा करने योग्य बनूंगा। आज से ही मैं वचन लेता हूँ कि मैं आर्य धर्म का पालन करुंगा और अपने देश (राष्ट्र) को आर्यावर्त बनाऊँगा। मेरा सहयोग अधिक से अधिक हिन्दुओं को आर्य बनाना।

नाम- ललित, आयु-25 वर्ष, योग्यता-कम्प्यूटर इंजिनियर
संजय इन्कलेव, NIT फरीदाबाद, हरियाणा

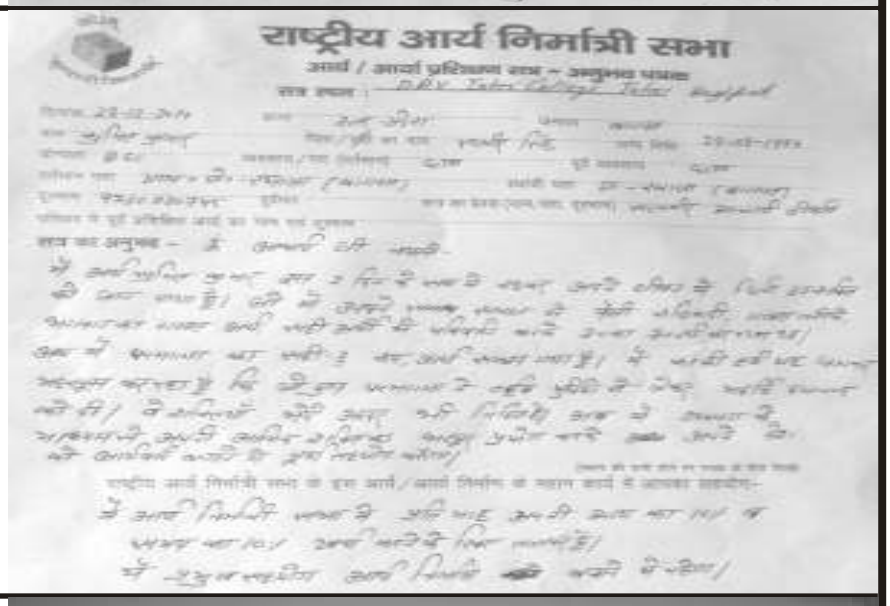
राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा
आर्य / आर्या प्रशिक्षण सत्र - अनुभव पत्रक

इस 2 दिन के सत्र में रहकर अपने जीवन में छिपी उस शक्ति को जान पाया हूँ जो मैं अपने समाज में फैली रूढ़िवादी, गलत तरीके का भगवान का अर्थ अपने अर्थों में परिवर्तन करके उनके अर्थ का अनर्थ कर रखा था उसे मैं सही अर्थ में जान पाया। अब मैं परमात्मा का सही-सही रूप और अर्थ समझ गया हूँ। मैं काफी हर्ष यह जानकर महसूस कर रहा हूँ कि जो गुण परमात्मा से ऋषि-मुनियों ने लेकर महर्षि दयानन्द जी को दी, वे शक्तियाँ मेरे अन्दर भी निहित हैं। अब मैं उपासना के माध्यम से अपनी अधिक शक्ति का भरपूर प्रयोग करके अपने देश को आर्यावर्त बनाने में पूर्ण सहयोग करूँगा।

मैं आर्य निर्मात्री सभा में प्रतिमाह अपनी आय का 10% व समय का 10% खर्च करने के लिए तत्पर हूँ, मेरा प्रमुख सहयोग आर्य निर्माण में रहेगा।

सुमित कुमार, आयु-20 वर्ष, योग्यता-बी॰ एस॰ सी॰
कार्य-विद्यार्थी, रमाला, बागपत, उत्तर प्रदेश

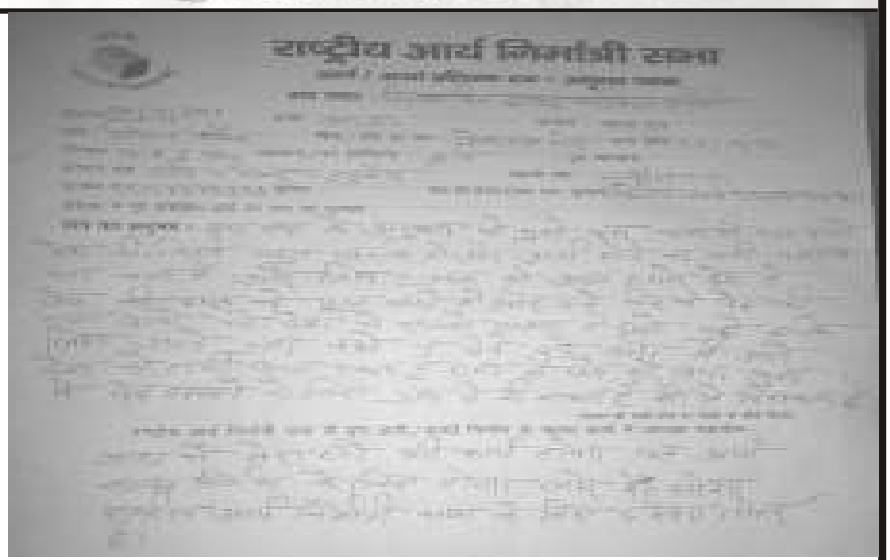
राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा

इस सत्र के अनुभव से मुझे पता चला कि आज हमारे देश की स्थिति बहुत खराब है और आर्य होने का सही मतलब पता चला है और जिस प्रकार से आज हमारे देश में वेद की बात को भूल गये हैं और हमें फिर से वेद की सभी बातों को देश के सामने लाना है, चाहे मुझे उसके लिए अपने प्राण क्यों न देने पड़ें और मैं अपने देश को तभी बचा सकता हूँ जब मैं वेद को बचा लूंगा। मैं वेद विद्या को बचाने के लिए अपने प्राण दे भी सकता हूँ, और ले भी सकता हूँ।

आज से मेरा जो भी कार्य होगा वह आर्यसमाज निर्माण के लिए होगा और मैं हमेशा राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के लिए हमेशा तैयार हूँ।

विजय पवॉर, आयु-22 वर्ष, योग्यता-एम॰ ए॰ विद्यार्थी
कार्य-विद्यार्थी-कृषि, सुन्हैडा, बागपत, उत्तर प्रदेश

आगामी आर्य प्रशिक्षण सत्रों की सूचना

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आर्य विद्या देने हेतू द्विदिवसीय सत्रों का आयोजन प्रतिमाह अनेक स्थानों पर हो रहा है। सत्रों की जानकारी समय पर सभी को मिल सके इसके लिए आगामी सत्रों की सूचना, जो अब तक निश्चित हो चुके हैं, दी जा रही है। इसके अलावा भी कई सत्र जो बाद में निश्चित होते हैं उन की सूचना एस.एम.एस. द्वारा आर्यों को भेज दी जाती है। सभी आर्यों से यह भी निवेदन है कि सत्रों की तिथियाँ कम से कम एक माह पहले निर्धारित करके सभा के महासचिव आचार्य जितेन्द्र जी से अनुमति ले लें, जिससे उनकी सूचना भी पत्रिका में दी जा सके।

आगामी आर्य प्रशिक्षण सत्र

क्र.सं.	स्थान	दिनांक	सम्पर्क	दूरभाष
7.	आर्यसमाज, सिहोर, म॰प्र॰	03-04 जनवरी	आर्य आशीष	8720850615
2.	आर्यसमाज, माहरा, सोनीपत, हरियाणा	03-04 जनवरी	आर्य धर्मपाल	9466842708
3.	आर्यसमाज, क्योडक, कैथल, हरियाणा	03-04 जनवरी	आर्य प्रवीन	9991443034
4.	खण्डेलवाल धर्मशाला, जुरेहरा, भरतपुर, राजस्थान	10-11 जनवरी	आर्य चरण सिंह	9785239372
	आर्या प्रशिक्षण सत्र			
1.	आर्यसमाज दरियापुर कलां, दिल्ली	03-04 जनवरी	आर्य देवेन्द्र	9968311782
2.	डी. ए. वी. इन्टर कॉलेज, टटीरी बागपत, उ० प्र०	03-04 जनवरी	आर्य व्रिजेश	7895025033
3.	आर्यसमाज, तिवड़ा रोड़, मोदीनगर, गाजियाबाद	10-11 जनवरी	आर्य नारायण सिंह	9785239372
4.	आर्यसमाज, मॉडल टाउन, हिसार, हरियाणा	17-18 जनवरी	आर्य चेतन प्रकाश	9729476563

आर.एन.आई-संख्या : DELHIN/2007/23260
पोस्टल रजि. संख्या : DL (N) 06/213/14-16

आर्य निर्माण राष्ट्र निर्माण

आर्य प्रशिक्षण सत्र (27-28 नवम्बर) अग्रवाल मंडी टटीरी, बागपत, उ॰ प्र॰ में आचार्य योगेश जी (विशेष सानिद्धय श्रद्धेय आचार्य परमदेव मीमांसक जी)

आर्य प्रशिक्षण सत्र (13-14 दिसम्बर) आर्यसमाज, नांगलोई दिल्ली में आचार्य हनुमत्प्रसाद जी व आर्य प्रदीप जी

पुस्तकों का विमोचन

गुरूकुल के ब्रह्मचारी

आचार्या सुशीला जी को सम्मानित करती आर्यसमाज की पदाधिकारी

आचार्य हनुमत् प्रसाद

आचार्या सुशीला जी

स्वामी महेश जी

रामप्रसाद बिस्मिल व स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस (दिनांक 21 दिसम्बर) आर्यसमाज सेक्टर-23-24, रोहिणी, दिल्ली

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् पत्रिका की सदस्यता हेतु 100 रुपए वार्षिक शुल्क मनीआर्डर से प्रांतीय कार्यालय के पते पर भेजें, स्थानीय राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के सदस्यों के पास भी शुल्क जमा कर रसीद ले सकते हैं। पूरा पता अवश्य लिखें, न पहुंचने पर दूरभाष से कार्यालय में सूचना दें। जिन सदस्यों की सदस्यता एक वर्ष से अधिक पुरानी है वे अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करवा लेवें।

स्वामी व प्रकाशक आचार्य परमदेव मीमांसक एवं सम्पादक आचार्य हनुमत् प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित एवं सुदर्शन प्रैस, दिल्ली-87 से मुद्रित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।